धर्म जीवन

वार्षिक चन्दा रु. 50/-

अप्रैल 2009

परम पूजनीय भगवान देवात्मा का अनोखा व्यक्तित्व

जीवन मार्ग का खुलना क्या?

कल्याण सत्संग और माता पिता दिवस

अंधविश्वास कैसे – कैसे

जीवन प्रसंग

आनन्द का स्त्रोत

परम पूजनीय भगवान देवात्मा का अनोखा व्यक्तित्व

श्री कनल जी, जो पूजयनीय भगवान के श्री चरणों में सालों साल रहे हैं उन्होंने लिखा है कि पूज्यनीय भगवान के मुख मण्डल की आभा इतनी जबरदस्त थी कि और महान पुरुष उनके सामने ऐसे दिखाई देते थे जैसे सूर्य के सामने चाँद। उनकी अद्वितीय रोशनी उनके चेहरे से झलकती थी। उनकी ऐसी रोशनी में बैठने से कई बार उन्होंने ऐसा अनुभव किया कि जैसे दुनियवी मोह बन्धन की बेड़ियां टूट रही हैं और किसी और ही ऊँचे लोग में प्रवेश हो रहा है। उनका व्यक्तित्व ऐसा था जैसे कि कोई डैनमो सैट, श्रद्धावान आत्माओं को हरकत में ला रहा है, आत्माओं में नीच जीवन से मोक्ष और उन उच्च भावों की मिठास घोल रहा है जो वास्तव में मनुष्य जीवन का अनमोल खजाना है।

आने वाली पीढ़ियां उनकी शिक्षा वा उनकी रचित पुस्तकों से लाभ उठाकर अवश्य विकसित होंगी, परन्तु उनके साक्षात दर्शनों से जो अनुभव उस वक्त के सेवकों और श्रद्धावानों ने प्राप्त किए, उनके चुम्बकीय व्यक्तित्व का जादू जो उन्होंने देखा, वह अब कभी सम्भव नहीं हो सकता।

पूजनीय भगवान ने अपनी बहुत खराब सेहत और बहुत भारी अन्य ज़िम्मेवारियों के बीच जब पूज्यनीय देवशास्त्र की रचना की और अनमोल ग्रन्थ मानवता को भेंट किया, तो पूज्यनीय भगवान ने यह ऐलान किया कि वह उस ग्रन्थ पर उपदेश देंगे और प्रैस में दिया गया कि यह क्रम 2 हफ्तों के लिए चलेगा। इस ऐलान से पंजाब और सिन्ध के दूर-दूर से वा निकटतम स्थानों से सेवक वा श्रद्धावान आए। कोई 4 दिन, कोई हफ्ता ठहरने के लिए आए क्योंकि मनुष्यात्मा दुनियवी बन्धनों में इस कदर जकड़े हुए हैं कि अपने भले के लिए समय निकालना कठिन है, और थोड़े से थोड़ा समय देकर ही हम सन्तुष्ट रहते हैं।

परन्तु यह एक अश्चर्यजनक घटना थी कि एक दो दिन के उच्च प्रभाव दायक उपदेशों के बाद उनके बन्धन की डोर ढीली होनी आरम्भ हो गई और सोई हुई आत्माएं जागने लगी। जैसे कोई बाहर की बर्फीली सर्द हवाओं से शरीर जम जाता है और वह अपने शरीर को हिलाने जुलाने के भी योग्य नहीं होता और सूर्य की गर्मी उसे फिर से नार्मल कर देती है, उसमें नई शक्ति आ जाती है, वह चलने फिरने के योग्य हो जाता है। उसी प्रकार नीच जीवन, नीच विचारों से आत्माएं बर्फ की तरह जमी हुई थी और अपने भले की ओर कदम बढ़ाना कठिन था, परन्तु जब अध्यात्मिक सूर्य भगवान ने साक्षात रूप से अपनी शक्ति संचार की तो आत्माओं में जाग्रति आनी आरम्भ हुई और कम से कम कुछ समय के लिए वह बन्धन ढीले पड़ गए। सरदार हरनाम सिंह जी को अपने काम को छोड़कर आना कठिन लग रहा था, उन्होंने अपने एक अधीन कर्मचारी को कहा कि वह जल्दी वापिस आ जाएंगे, परन्तु 2-3 उपदेश सुनने के बाद उन्हें अपना काम बिल्कुल महत्वहीन दिखने लगा और उन्होंने सचमुच ही उस जन को लिखा कि वह काम बन्द करके पूजनीय भगवान के दरबार में पहुंच जाएं और उनके बहुमूल्यों प्रवचनों को सुने।

दिवान हासामल जी बिमारी की हालत में आए और अपने संसारिक उलझनों में उलझे हुए थे; वह अपनी मदहोशी से जागे और पुकार उठे "पूज्यनीय भगवान वास्तव में बचावनहार हैं। उनकी ज्योति और शक्ति आत्मिक निराशावाद और बन्धनों को तोड़ती है और जीवन के उच्च लक्ष्य की ओर कदम बढ़ाती है।

एक 70 वर्ष की औरत प्रतिदिन एक मील चलकर आती थी। कई वकील कुछ समय के लिए आए थे, परन्तु बहुत दिन ठहरे। पूज्यनीय भगवान की शक्ति से नीच आकर्षणों के बन्धन टूट रहे थे। धन, नीच वासनाओं, नाम, पद, पोजीशन, घर बार सब अपने आत्मिक भले के आगे हेच नज़र आने लगे थे।

धर्म जीवन

खण्ड 21 अंक 4

अप्रैल 2009

वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादक
डा. विनोद खेड़ा

सह सम्पादिका
सुरजीत बराड़

जीवन मार्ग का खुलना क्या?

हमने मार्च के अंक में "जीवन का मार्ग क्या है?" इस पर अपने विचार व्यक्त किए थे, अब इस लेख में संक्षिप्त रूप में यह विचार करेंगे कि यदि पता भी लग जाए कि जीवन का मार्ग क्या है, तो भी जीवन का मार्ग खुलता नहीं और न ही हमारा सच्चे अर्थों में भला हो सकता है। जितना अवश्यक जीवन मार्ग को जानना है (वह भी कठिन है) उससे कहीं कठिन यह जानना है कि जीवन मार्ग कैसे खुल सकता है और उसके लिए किस प्रकार के संग्राम करने की आवश्यकता है यह जानना उससे भी अधिक कठिन है।

संक्षिप्त रूप से जीवन मार्ग के खुलने का अर्थ है कि हमारे हृदय की ऐसी अवस्था हो जाए कि जिसमें पहले अपने जीवन को नष्ट वा बर्बाद करने वाले शत्रुओं का ज्ञान प्राप्त करने की प्रबल इच्छा प्राप्त हो, फिर वह नीच सुख अनुराग और नीच घृणाओं नामक शत्रुओं को घटाने का संग्राम हो और वह कम होते जाएं और उसके विरुद्ध जीवन को उन्नत करने, उसको विकसित करने के सामानों अर्थात् पूजनीय भगवान के देवरूप के साथ निकटता प्राप्त होने लगे। नीच सुखों से मोक्ष और उच्च भावों में विकास की अवस्था अति सुन्दर अवस्था है। इसी अवस्था को प्राप्त होकर सच्चे अर्थों में जीवन मार्ग खुलता है।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा के साथ निकटता का अर्थ है परम पूजनीय भगवान देवात्मा के सर्वोच्च, अद्वितीय, देव प्रभावों अर्थात् देव ज्योति और देव तेज को प्राप्त करना, क्योंकि हमारे जीवन के मार्ग को जानने वा खुलने का सीधा सम्बन्ध इससे जुड़ा हुआ है। जिस मात्रा में हमें यह देव प्रभाव प्राप्त होंगे, वहां तक ही हम जीवन मार्ग को जान सकते हैं, वा विकसित कर सकते हैं। मूल वस्तु देव प्रभाव हैं, जैसे खेती के लिए जल है, शरीर के लिए हवा, पानी और खुराक है, उसी प्रकार आत्मा वा जीवन के लिए देव प्रभावों की अवश्यकता है।

प्राय: हम साथी सेवकों वा कर्मचारियों की यह हालत रहती है कि देव प्रभावों तक हमारी रसाई ही नहीं हो पाती। केवल सत्संगों (वह भी यदि देव प्रभाव दायक हों) में या अपने निज के साधनों में हम मामूली और आरम्भिक प्रकार के देव प्रभाव प्राप्त कर सकते हैं, जिनसे उक्त जीवन के मार्ग

का पता लगना वा उसका खुलना असम्भव है।

सारांश यह कि परम पूजनीय भगवान देवात्मा के अद्वितीय और महान देव प्रभावों तक पहुंच हो और वह प्राप्त हों तो हमारे जीवन का मार्ग खुल सकता है। वास्तव में अद्वितीय देव प्रभावों तक स्थाई रसाई की अवस्था से ही जीवन मार्ग खुल सकता है अन्यथा नहीं। अर्थात् देव प्रभावों तक स्थाई रसाई ही जीवन मार्ग का खुलना है।

देव प्रभावों की प्राप्ति कैसे हो?

देव प्रभावों की प्राप्ति के क्रम में एक हिमालय पर्वत जितनी विरोधक शक्ति, जो सबसे बढ़कर विनाशक है, वह हमारा अंह अनुराग है। यह सबसे बढ़कर हमारा आध्यात्मिक शत्रु है। हमारी त्रासदी यह है कि क्या सेवकों और क्या कर्मचारियों को भी अधिकतर इसका बोध वा ज्ञान नहीं होता। यह भयानक शक्ति बोतल के गले में फंसे कार्क की तरह देव प्रभाव प्राप्ति का मार्ग बन्द किए हुए है। इस अंह नामक अध्यात्मिक अवरोध के कारण देव प्रभाव प्राप्ति का मार्ग बन्द रहता है, जितना यह कार्क ढीला पड़ता है, उतना ही कोई जन देव प्रभाव प्राप्त करने के योग्य वा अधिकारी बनता है। अहं अनुराग के कारण ही हम न तो परम पूजनीय भगवान देवात्मा के अद्वितीय, असीम, महान और अलौकिक जीवन दायक रूप को पहचान सकते हैं, न उनके साथ कोई सच्चा सम्बन्ध बनता है और न ही उनके देव प्रभाव प्राप्त कर सकते हैं, इसलिए स्वभाविक ही जीवन का मार्ग नहीं खुल सकता।

अब यदि जीवन को जानना वा जीवन के अर्थात् आत्मा के भले का मार्ग खोलने की तनिक भी इच्छा है, तो हमें क्रमानुसार कुछ कदम उठाने होंगे और कुछ नियम पूरे करने होंगे।

सर्वप्रथम देव प्रभावों की प्राप्ति के नियम पूरे करने पड़ेंगे अर्थात् :-

1) देव प्रभावों की प्राप्ति के लिए परम पूजनीय भगवान देवात्मा के महान देवरूप की अलौकिक झलक को देखने के योग्य होना।

2) उनके देव रूप को बार-बार नमन करना, उन्हें महान, जीवन दाता, जीवन पथ-दर्शक अनुभव करना, उनके इस महान देव रूप का उनके ही देव प्रभावों में दर्शन करके, अपनी महान अधम, नीच पिशाच, घृणित विनाशकारी वा महा हानिकारक अवस्था को देखने के योग्य होना।

3) ऐसे निरन्तर साधनों के द्वारा उनके देव प्रभावों तक रसाई करने का निरन्तर संग्राम करना।

4) देव प्रभावों की प्राप्ति के मार्ग में बाधक कारणों को जानना, उनका प्रकृत बोध और ज्ञान पाना, उनको कुछ कम करना, हो सके तो उनसे पूर्ण मुक्त होना और देव प्रभाव प्राप्ति का स्थाई मार्ग खोलना।

5) देवरूप के प्रकृत दर्शन करके और बार-बार उन्हें सजदा करके देवरूप के सम्बन्ध में सर्वोच्च सात्विक भावों को उत्पन्न करना और देव प्रभावों की प्राप्ति की योग्यता को बढ़ाना।

6) देव प्रभावों की लगातार प्राप्ति के द्वारा अपने नीच जीवन से मोक्ष और उच्च जीवन की लालसा और उसकी प्राप्ति के मार्ग में बाधक कारणों का स्पष्टीकरण करने के योग्य होना।

जीवन मार्ग में मुख्य रूप से बाधक कारण :-

सर्वप्रथम हमारे जीवन मार्ग में बाधक सबसे बड़ा शत्रु हमारा महा विनाशक अहं अनुराग है, अहं अनुराग सब नीच अनुरागों से महा भयानक है। जिस

प्रकार प्रत्येक मनुष्य सुख अनुरागी है, वैसे ही प्रत्येक मनुष्य अहं अनुरागी है, जो मनुष्य को जन्म से ही विरासत में मिलता है। जितना अहं अनुराग हमारे भीतर अधिक होता है, उतना ही हम उससे मुक्त होने की भ्रान्ति के शिकार होते हैं। यदि यह भाव श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी जैसी महान हस्ती को लम्बे समय तक भ्रान्ति में डाल सकता है, तो हम क्या चीज़ हैं? श्रद्धेय श्रीमान जी का महा सौभाग्य कि उनके सिर पर परम पूजनीय भगवान देवात्मा विराजमान थे? साक्षात रूप से उन्हें देव प्रभाव पाने का सौभाग्य प्राप्त था। आजकल इससे (अहं) सावधान करने वाले हालात नसीब नहीं। इसलिए न तो हम अपने इस भयानक आत्मिक रोग को देख सकते हैं और न इससे उत्पन्न अपने महा भयानक स्वार्थ, स्वेच्छाचारिता, अपने गुस्से को देख सकते हैं। न अपने भीतर के अन्य रोगों अर्थात् नीच घृणा, ईर्षा द्वेष, मान बड़ाई, प्रशंसा आदि को देख सकते हैं। अपने मोह बन्धन, अपने शारीरिक नीच अनुरागों से भी अनभिज्ञ रहते हैं। जब यह महा भयानक वा अति विनाशकारी भाव देख ही नहीं सकते, तो उनसे निजात पाने की इच्छा वा संग्राम कैसे सम्भव है?

यह सब नीच अनुराग हमारे जीवन को विकसित करने में बाधक है। यह बाधाएं कड़े साधनों को, लगातार महीनों वा सालो तक जारी रखकर योग्यता होने से अपने भीतर प्रकृत रूप में दिखनी आरम्भ हो सकती हैं। अपने इस दुष्ट वा महा अपराधी रूप को देखकर उनसे मुक्त होने के लिए परिशोध करके इन बाधाओं को और कम करना सम्भव है।

धर्म जीवन के सच्चे अभिलाषी जनों के लिए सर्वप्रथम देव प्रभावों की प्राप्ति के लिए अपनी इन बाधाओं को गहराई से देखना और उन्हें कम वा शिथिल करने के साधनों में समय रहते रहते जुट जाना, जीवन मार्ग को खोलने में सहायक हो सकता है।

श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी महाराज का निजी महान साधक जीवन हमारे सबके लिए लाईट हाऊस का काम देता है। हम उनके निज नीचता को देखने और लिखने सम्बन्धी साधनों का अधिक से अधिक अनुकरण करके (अधिकारी होने पर) अपना बन्द जीवन मार्ग खोल सकते हैं और उच्च बरकतों के भागी बन सकते हैं।

बलदेव सिंह

श्रीमान देवत्य सिंह जी लिखते हैं :-

"मूर्ख और जाहिल मनुष्यों को विद्वान बनाने के लिए और रोगी और पीड़ित मनुष्यों को स्वथ्य करने के लिए तो स्कूल और हस्पताल खुल गए हैं, परन्तु चोर, ठग, रिश्वतखोर, बदचलन, शराबी, कबाबी और जुएबाज़ मनुष्यों को जो अपने नीच कर्मों के द्वारा इस संसार में साक्षात नरक उत्पन्न कर रहे हैं और भेड़ियों से भी बढ़कर हानिकारक और हिंसक प्रमाणित हो रहे हैं। संवारने और दूसरों के लिए हितकर और सेवाकारी बना देने के लिए कोई कारज नहीं है। पंथ और मत तो बेशक बहुत हैं परन्तु कहीं ऐसा काम नहीं हो रहा।

कल्याण सत्संग और माता पिता दिवस

पिछले 30 वर्षों की तरह इस वर्ष भी कल्याण मल्लेका जिला भटिंडा में विशेष सत्संग और माता - पिता दिवस की सभाएं 12 फरवरी रात से 15 फरवरी दोपहर तक रखी गई। इस मन्तव्य के लिए 60 के लगभग धर्म सम्बन्धियों को पत्र लिखे गए। बहुत से फोन भी किए गए। श्रीमान बलदेव सिंह जी 12 फरवरी चण्डीगढ़ से रवाना होकर सर्वप्रथम समराले श्री नायब सिंह जी के पास पहुँचे। वहां कुछ देर रुककर, उन्हें सत्संग की प्रेरणा देकर श्रीमान जी लुधियाना पहुंचे। वहां श्रीमान जगजीत सिंह जी को मिले। वहां से श्रीमान जगजीत सिंह जी को साथ लेकर वहां से मोगा श्रीमान अवतार सिंह जी बराड़ के पास पहुंचे, शाम तक कल्याण पहुंच गए।

इस सत्संग के लिए नगर वासी साथी सेवक सेविकाओं को पहले ही पता दिया जा चुका था। सत्संग स्थान की सफाई आदि करवाई जा चुकी थी। यात्रियों को ठहरने वा खाने का प्रबन्ध किया जा रहा था। विशेषकर श्रीमान बलबहादुर सिंह जी, मास्टर तेज राम जी के परिवारिक जन, श्रीमान बलजीत सिंह जी, बूटा सिंह जी आदि बहुत ही सेवाकारी होते रहे।

12 फरवरी सुबह से ही यात्री आने शुरू हो गए थे। लुधियाना, देहरादून, खतौली, मेरठ, दिल्ली, चण्डीगढ़, मोगा, रणीयां, गंगानगर, पदमपुर, गोनियाना और गुजरात के स्थानों से 18 - 20 यात्री शाम तक पहुंच गए थे। उन्हें वा स्थानी सेवकों वा श्रद्धावानों को लेकर रात को एक सभा की गई।

सभा स्थान के निकट ही धर्म सम्बन्धियों के खाने का प्रबन्ध किया गया, जिसमें विशेष रूप से तेज राम जी का परिवार बहुत सेवाकारी होता रहा। यात्रियों ने कड़ाकेदार सर्दी से बचने के लिए लकड़ियां जलाकर बड़ा सुन्दर सेकने के लिए पहले दिन से ही प्रबन्ध कर लिया था।

13 फरवरी की शाम तक और यात्री मोगा, मलेका, केसूपुरा से एक टैम्पू में कुछ जनों की पार्टी, चण्डीगढ़ से जगदीश जी, प्रिंसीपल डा. सतिन्द्र ढिल्लों, प्रिंसीपल श्रीमती सुरजीत जी बराड़, मधू सूदन जी, जलधर जी और उनके पुत्र, गोनियाना से महिमा सवाई, यमुनानगर, संगरूर से श्रीमान सीता राम जी, थराजवाला से गुरुदीप आदि पहुंच गए थे। फख़रसर से एक नौजवान आखरी सभा में गोनियाना मण्डी से हैडमास्टर हंसराज जी के 6 परिवारिक जन और एक जन और भी पहुंच गए थे। इस प्रकार कोई 55 - 56 यात्री बाहर से पहुंच गए। स्थानिय सेवक परिवार वा श्रद्धावान जन भी आकर शामिल होते रहे।

सबके ठहरने का और सुबह नाश्ते दूध, डबलरोटी, बिस्कुट आदि का वा दोपहर बाद जरूरत अनुसार जलपान का और रात के दूध का प्रबन्ध धर्म सम्बन्धियों ने बहुत अच्छा किया। आखिरी दिन 70 - 80 सुन्दर हार भी मंगवाए गए। खाने का प्रबन्ध सादा परन्तु रूचि अनुसार बड़ा मुफीद साबित हुआ। यात्रीगण सब प्रकार से सन्तुष्ट रहे।

ओम प्रकाश जी आदर्श भी अपने गीत भेंट करते रहे। भजनों का गान श्रीमान जगदीष जी हमेशा की तरह करते रहे। बेशक सर्दी बहुत थी,

परन्तु इससे हाजरी पर कोई विशेष असर नहीं पड़ा। सारा प्रोग्राम बिना विघ्न सम्पन्न हो गया। बहुत अच्छा वातावरण बना। सबने ही लाभ उठाया। कुछ जनों ने अपनी कमियां देखने का दुर्लभ अवसर पाया। कुछ प्रभावित होकर अश्रु बहाते रहे और परम पूजनीय भगवान देवात्मा को धन्यवाद देते हुए उनके आगे सजदा करने के लिए मजबूर होते थे। एक जन ने शराब, मांस छोड़ा, एक ने चाय न पीने की प्रतिज्ञा की। एक और जन ने एक सुन्दर परिशोध करने के लिए मजबूर हो गया। कईयों ने आगे सत्संग करने के लिए इच्छा प्रकट की। इस सत्संग की कुल 8 सभाएं की गई। उनका अति संक्षेप वृतांत इस प्रकार है।

सभाएं श्रीमान बलदेव सिंह जी और श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने कराई।

12 फरवरी शाम 8.00 बजे शाम :– यह सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई, जिसमें कुछ विशेष जनों का ज़िकर किया गया, जिन्होंने परम पूज्यनीय भगवान देवात्मा के प्रभावों को प्राप्त करके अपने जीवन की दिशा में विशेष परिवर्तन प्राप्त किया। उनके जीवन की कदरें बदल गई। नीच संगत से दूर रहने और उच्च संगत में रहने से जीवन सुखदायक बन गया। बाबा बचन सिंह जी के जीवन की बहुत उत्साह वर्धक कथा सुनाई गई। श्रीमान सुच्चा सिंह जी कल्याण का अश्चर्य जनक उच्च परिवर्तन का ब्यान किया गया, जिन द्वारा दान की हुई ज़मीन पर समाज का मन्दिर बना हुआ है। यह सभा बहुत प्रभावदायक थी और हृदयों को छू रही थी, यह महसूस हो रहा था, "मेरे सत्गुरु, मेरे भगवान, धर्म का दान देते हैं, बदल कर भेड़िए ऐसे बना इन्सान देते हैं" यह सचाई प्रत्यक्ष महसूस होती है।

13 फरवरी सुबह 9.00 बजे :– यह सभा भी श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। इस सभा में बताया गया कि हमारा जीवन अर्थात् अधिकतर देव समाजियों का जीवन इस तरह गुज़र रहा है कि जो उच्च धर्म सम्बन्धियों, विशेषकर परम पूजनीय भगवान देवात्मा को तकलीफ पहुंचाता है। कोई विशेष आत्मा ही इस हालत को महसूस करता है। श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह ने इस सच्चाई को बहुत सुन्दर ढंग से अनुभव किया और जीवन की उच्चतम बुलन्दियों को प्राप्त किया। "हमने तुमको नहीं पहचाना।" "सतगुरु तुमरा मैं अपराधी" "तुम्हें मैंने सताया है।" कुछ और उच्च धर्म सम्बन्धियों का ब्यान किया, जो बहुत हृदयस्पर्शी था। पत्रों द्वारा कई धर्म सम्बन्धियों के दुखों का वर्णन किया गया, जो उन्होंने देवात्मा सत्गुरु को पहुंचाए हैं, जिनका कुछ अनुमान "मेरे आद्वतीय त्याग भाग तीन" के पाठ से कुछ हो सकता है। यह सभा बहुत प्रभावशाली थी। सभापति जी विशेषकर इस चिन्तातुर अवस्था में महसूस कर रहे थे कि हम देव समाजी या सेवक कहलाने वाले ऐसा जीवन व्यतीत कर रहे हैं, कि जिससे परम पूजनीय भगवान देवात्मा का अपमान, घोर अपमान कर रहे हैं। इतना दुखी कर रहे हैं कि मानों हमारे हाथों में छुरे पकड़े हुए हैं और सत्गुरु की छाती में घोंप रहे हैं। सभापति जी इस दुखदाई अवस्था को बहुत दुख के साथ पेश कर रहे थे और सतगुरु के चरणों में झुक रहे थे।

13 जनवरी 3.30 बजे :– यह सभा

श्रीमान बलबहादुर जी ने करवाई इसमें बताया गया कि वेदान्त की शिक्षा हमारे देश और अधिकांश धर्म मतों के लिए बहुत घातक सिद्ध हुई है। जिस विश्व को और उसमें विराजमान पदार्थों को और सम्बन्धियों को मिथ्या बताया गया है और उनसे उदासीन होने को धर्म समझा गया है, परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने सम्बन्धियों की हकीकत को रोशन किया है और बहुत उज्जवल रुप में दर्शाया है कि सम्बन्धों के बिना धर्म की कल्पना भी नहीं कर सकते। सम्बन्धों के बिना जीवन असम्भव है। सम्बन्धों में उच्च व्यवहारों द्वारा उच्च मेल धर्म का सच्चा चिन्ह है। उच्च भावों या सात्विक भावों के बिना उच्च व्यवहार नहीं हो सकते। कई उच्च भावों के नाम बताए गए। मनुष्य शुक्रगुजारी के भाव के बिना खुदगर्ज़, कमीना और पापी रहता है। देवात्मा के देवप्रभावों के द्वारा अधिकारी आत्मा अपनी अकृतज्ञता वा नशुकरेपन को अनुभव करते हैं। अनेक जन शुकरगुजार पुत्र बने, कई शुकरगुज़ार पति बने। यह धर्म के सच्चे द्वार के विषय में श्रीमान बलदेव सिंह जी ने प्रभावशाली उदाहरणों के द्वारा इस सभा को और भी प्रभावशाली बना दिया।

13 फरवरी शाम 8.00 बजे :- यह सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। इसमें बताया गया कि परम पूजनीय भगवान देवात्मा की देव ज्योति के बिना मनुष्य को अपने व्यवहारों की कोई समझ नहीं आती। अपने परिचालक भावों का कुछ पता नहीं चलता। आत्मिक अन्धकार के कारण अपने आपको ठीक, सुन्दर, निर्दोष समझता है। एक नौजवान को जब भगवान देवात्मा की रोशनी मिली तो बहुत दुखी हुआ कि मैं अपनी पत्नी को ज़ोर देकर कह रहा था कि हमने सारा ज़ोर लगाना है कि जिससे माता पिता बहुत दुखी हों, अधिक से अधिक अपमानित हों, उसने बताया कि मेरे मामा जी ने समझाने की कोशिश की तो उनको भी बुरी तरह अपमानित कर दिया। और उनका निन्दक बन गया। उस नौजवान ने रो-रोकर अपने गुनाहों को स्वीकार किया और वहां वर्तमान अपने उपकारी से क्षमा मांगी। भगवान देवात्मा सच्चे सत्गुरु की रोशनी से वह नेक इन्सान बन गया। एक और नौजवान को अपना गन्दा जीवन बहुत घृणित अनुभव हुआ। सत्गुरु के असर पाकर वह नेक बेटा बन गया। एक बेहद नेक अध्यापिका को अपनी बड़ी बहन के सम्बन्ध में अपना स्वार्थ नज़र आया सत्गुरु के असर पाकर वह बहुत सन्मान करने वाली और सेवाकारी बन गई। यह आत्मिक अन्धकार केवल पूजनीय भगवान की ज्योति से ही दूर होता है। दुनियां में कोई और ऐसा सत्संग नहीं जहां इन्सान अपनी गल्ती, अपनी कमी, अपना गुनाह कबूल करके सच्ची शुद्धि, तड़पन अनुभव करता हो, वही सच्चा सत्संग होता है, जिसमें मनुष्य अपना रूप देखने के योग्य हो। देवात्मा के दर के बिना विश्व के अन्दर ऐसा कोई धर्म स्थान नहीं, जहां मनुष्य अपना रूप देख सके। इसके बाद श्रीमान बलदेव सिंह जी ने इस विषय पर और रोशनी डाली।

14 फरवरी 9.30 बजे सुबह :- यह सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई कि परम पूजनीय भगवान के दर के बिना आत्मा की कोई सोझी नहीं हो सकती। आत्मा का अस्तित्व नेचर का अंश है। नेचर के प्रत्येक अस्तित्व पर नेचर के नियम हावी हैं। नेचर के नियम हमारे शरीर, हमारी सेहत, दिमाग

वा आत्मा सब पर हावी हैं। नेचर के नियमानुसार ही हमारा विकास हो सकता है और होता है। इसके नियमानुसार ही विनाश होता है। धर्म जगत भी पूर्ण रूप से नेचर के अटल नियमों के अधीन है। उच्च संगत, उच्च वातावरण और देव प्रभाव विकास के नियम हैं। नीच संगत, नीच वातावरण, दुख, तबाही, बर्बादी के नियम हैं। बहुत ही सुन्दर दृष्टांतों से जीवन के विकास पर रोशनी डाली। देवगुरु रचित पुस्तकों के अध्ययन के लिए ज़ोरदार प्रेरणा की गई। हमारे भजनों का हमारे दिलों से मेल नहीं इसलिए बहुत कम विकास होता है और कुछ देर बाद विकास रूक जाता है। सत्गुरु से उदासीन होकर भला नहीं हो सकता। कुछ न कुछ उच्च प्रेरणाएं इस सभा से मिली।

3.30 बजे दोपहर :– यह सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। इस सभा में इस विषय पर चर्चा की गई कि आम मनुष्य सदा स्वार्थ के नीच जीवन की कैद में कैद रहते हैं। स्वयं दुखी होते हैं और अपने से सम्बन्धित जनों को भी दुखी करते हैं और क्लेश पहुंचाते हैं। स्वार्थ की दलदल से निकलकर परहित से धर्म का आरम्भ होता है। महान परोपकारी डा. विद्या सागर की माता ने फरमाया कि हाथों की शोभा सोने के कंगनों से नहीं, चाँदी के कंगनों से नहीं बल्कि इनकी शोभा सेवा करने में है। गुरु रामदास सराय के गेट पर यह लिखा हुआ है कि "बिना सेवा धरिग हाथ पैर" सत्गुरु देवात्मा फरमाते हैं कि "परहित भाव हृदय उपजाओ, धर्म मार्ग की दिग तब जाओ" मनुष्य आप तौर पर अहं अनुरागी है। अहं अनुराग से स्वार्थ की उत्पत्ति होती है। स्वार्थ से जीवन का नाश होता है। स्वार्थ त्याग करके परोपकार किए बिना जीवन नहीं बच सकता।

फिर श्रीमान बलदेव सिंह जी ने परोपकारी जनों की भावनाओं के विषय में बताया। देवात्मा फरमाया करते थे कि काश! हमारा शरीर स्टील का होता, उसे न आराम की आवश्यकता होती और न खुराक और पानी की। श्रीमान मिस्तरी वधावा राम जी के परोपकार की कथा सुनाई। वह सेवा करते-करते दाता जी बन गए। श्रीमान अतर सिंह जी देव असरों को पाकर महान, विशुद्ध परोपकारी बने कि श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी बन गए।

14.2.08 शाम 8.00 बजे :– यह सभा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने करवाई। इसमें तीन बातों की ओर ध्यान फेरा गया, पहला यह कि पाप और धर्म इकट्ठे नहीं चल सकते। परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने धर्म जगत में प्रवेश करने से पहले 8 पापों का त्याग अवश्यक बताया है। नशई, मांसाहारी, चोर, रिश्वतखोर, बेइमान, कातिल व्यभिचारी धर्मवान नहीं हो सकते। धर्म की दहलीज़ पर पैर भी नहीं रख सकते।

दूसरी बात झूठ, मिथ्या धर्म विरोधी हैं। झूठे विश्वास, झूठे वहम झूठे ताबीत, कल्पित पाठ, मिथ्या स्नान सब धर्म से बेमुख करते हैं। परम पूजनीय भगवान देवात्मा पाप और झूठ के दुश्मन है। हित के अनुरागी हैं। तीसरी बात बताई है धर्म प्राप्ति के लिए उच्च भावों की उत्पत्ति की अवश्यकता है। सन्मान भाव के बिना घरों में सुख शान्ति, मेल और धर्म नहीं आ सकता। फिर बताया गया कि कैसे पता लगे कि कोई बड़ों का सम्मान करता है?

फिर श्रीमान बलदेव सिंह जी ने उच्च

भावधारियों की उदाहरणें पेश की। यह सभा बहुत ही प्रभावशाली थी, अनेक जन अश्रु बहा रहे थे। एक विद्वान व्यक्ति ने कहा कि श्रीमान जी यदि फुर्सत मिले तो ऐसी सभा हमारे घर में कराने की कृपा करें।

15.2.2009 सुबह 9.00 बजे :- यह सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई। यह माता पिता सन्तान सम्बन्धी विशेष सभा थी। शुरू में परम पूजनीय भगवान द्वारा रचित भजन "श्रद्धा भाजन माता पिता जी श्रद्धाभाव करूँ उपहार" गाया गया। वातावरण बहुत ही प्रभावशाली हो गया कि कई जन श्रद्धा विभोर होकर फूट फूट कर रो रहे थे। सभापति जी ने बताया कि हम कई पक्षों में अन्ध ेरे में हैं और अज्ञानी है। हमें विशेष गुणधारियों के गुण नज़र नहीं आते, दूसरा पक्ष है कि हमें उपकारियों के उपकार नज़र नहीं आते, उनकी मेहरबानियां नज़र नहीं आती। नाशुकरे बच्चों के व्यवहारों के दृष्टांत बताए गए। स्वार्थी को यह नज़र नहीं आता कि उसके व्यवहार से माता पिता दुखी होते हैं। जो माता पिता के दुख को नहीं देख सकता, उनके उपकारों को अनुभव नहीं कर सकता, वह धर्म प्राप्त नहीं कर सकता। अकृतघ्न बच्चे माता पिता को कतल तक कर देते हैं। ऐसे बच्चों की हृदय विदारक घटनाएं बताई गई।

फिर विकास के क्रम में कैसे पशु पैदा हुए इन्सान पैदा हुए और परोपकारी इन्सान पैदा हुए, सात्विक जीवन धारियों से आगे विकास के क्रम में सत्य और शुभ अनुरागी परम पूजनीय भगवान देवात्मा का आर्विभाव हुआ।

बताया गया कि मनुष्य आंखें और दिमाग रखकर कुछ नहीं देखता, बुद्धि रखकर भी बहुत कुछ नहीं देखता, अन्धा है। सांईसदान उच्च कोटि का दिमाग रखकर भी, नेचर का अन्धेरा दूर करके भी, बहुत कुछ नहीं देख सकते। परोपकारी दूसरों के दु:ख अभाव दूर करके भी अपनी हस्ती के अभावों को नहीं देख सकते। पूजनीय भगवान ने यह अन्धेरा दूर करके दिखाया है कि माता पिता का हमारे जीवनों में क्या स्थान है, हमारे उनके प्रति क्या कर्त्तव्य है, हमारे व्यवहार कैसे होने चाहिए।

सभापति जी ने अपने माता के कुछ उपकारों का बहते हुए आंसुओं से ब्यान किया, पूजनीय भगवान को बार-बार धन्यवाद दिया। बहुत ही उच्च प्रभाव दायक मण्डल पैदा हुआ। फिर सभापति जी ने हाजरीन से अपने-अपने माता पिता के सम्बन्ध में अपने भावों का प्रकाश करने की प्रार्थना की।

भाव प्रकाश

श्रीमान बलबहादुर सिंह जी :- यहां 3-4 दिन से अमृत वर्षा हो रही है। हृदय धुल रहे हैं, उच्च अवस्था धारण कर रहे हैं, इस सबके लिए गुरु महाराज का धन्यवाद करता हूँ। बाहर से आए जनों ने इतनी बड़ी संख्या में आकर दर्शन दिए और ऐसा मण्डल बनाने में सहयोग दिया, इसलिए सबके आगे हृदय झुकता है। मैं पूरा धन्यवाद ही नहीं कर सकता। सेवा में कमी के लिए क्षमा मांगता हूँ। माँ के सम्बन्ध में एक भजन गाने की प्रार्थना की श्रीमान जगदीष प्रसाद जी ने "मेरी माता जन्म दाता, तुम्हीं से जिन्दगी मेरी", नामक भजन का भरे हृदय से गान किया।

श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने अपना ब्यान जारी रखते हुए कहा कि जैसे सभाओं में बताया गया है, यहां आकर हमारी हृदय की आँखें बन जाती है। मुझे गहराई से अनुभव हुआ है कि मेरा भी किसी अंश आत्मिक आंखों का मोतिया उतरा है। प्रो. मोहन सिंह जी सावें पतर ने लिखा है कि "माँ तो लैके छां उधारी, रब ने स्वर्ग बनाए" एक गीत में आता है कि "उस (रब) को नहीं देखा हमने कभी, उसकी जरूरत क्या होगी, ऐ मां तेरी सूरत से अलग, उसकी सूरत क्या होगी"।

मां बाप के साथ हमारे घर मन्दिर बन जाते हैं। इन मन्दिरों की Sacrilege से गुरु महाराज बचाते हैं। जिन व्यपहारों और क्रियाओं से इन फरिश्तों को सताया है, वह याद आकर अब गहरे शोक और विषाद से भरते हैं, दिल तड़प उठता है। हमारी खातिर कैसे अपने आपको झोंका है, फना किया है, भेंट चढ़ाया है और त्यागा है, उसकी महान, स्वर्गीय और दिल को छलनी करने वाली तस्वीर अब मुझे दिखाई देती है। मैं पिता के हाथों के पोटों पर बहता खून आंखों से देखा है। हमारे लिए कमाई की। ऐसी अति पवित्र कमाई को मैंने फिल्में देखने और शराब पीने, मुर्गे खाने में बर्बाद करके सताया है। उन महान फरिश्तों को तुच्छ, छोटा और अपने आपको बड़ा बनाकर पागलपन में उनका निरादर वा अपमान किया है। उनको इस प्रकार तड़पाना गुरु महाराज ने दिखाया है। गुरु महाराज काश! मैं आपका धन्यवाद कर सकूं। आपका अद्वितीय दान और मिल सके और अपने फरिश्तों को और सताने से बच सकूं। आपकी कृपा हो।

श्रीमती डॉ. सतिन्द्र ढिल्लों :- सबसे पहले मैं गुरु महाराज का धन्यवाद करती हूँ कि उन्होंने हमें कुछ न कुछ माता पिता का रुप दिखाया है। (बहते हुए आंसुओं से) पिता जी का यहां आकर विशेष उपकारी रुप दिखाई दिया है कि पिता जी ने मेरी बड़ी बहन जी की शादी के लिए गुरु महाराज के मिशन के कर्मचारी को चुना। यहां ऐसा सुन्दर काम देखकर वह उपकार बहुत गहराई से अनुभव हुआ है। बहुत खुशी और सौभाग्य अनुभव हुआ है, पिता जी देव समाज के साथ बहुत गहरा सम्बन्ध अनुभव करते थे। उन्होंने हम बहनों को पढ़ाने के लिए बेहद संग्राम किया है। पिता जी की हमदर्दी भरी आत्मा याद आकर उनके चरणों में झुका रही है। मेरी माता ने मुझे दो बार जन्म दिया है। मेरे बेटे की पैदायश में मैं खत्म हो गई होती यदि मेरी माता की तड़प और फिकरों भरी छाया मेरे पास न होती। मेरा थोड़ा सा दु:ख देखकर मेरी माता झट मेरे पास पहुंच जाती थी। मुझे सब बहन भाईयों से बढ़कर प्यार दिया है। मेरी हर प्रकार की सहायता की है। काश! मेरे भीतर की आंखें खुल सकें और उनकी उच्च इच्छाएं जो मुझसे वह रखती थी, मैं पूरी कर सकूं।

उक्त बीबी पहली बार अपनी बड़ी बहन के साथ 13 फरवरी से 15 फरवरी तक ठहरी। तीन दिन सभाएं सुनी और लाभ उठाया। गांव में रखे खून दान कैंप में खून दान किया और दोनों बहनों ने खून देने की बरकतों को हाजरीन को बताया। इस महान सेवा को बढ़ाने की प्रेरणा दी। अपनी खुशी और ध न्यवाद को प्रगट किया। भंटिडा मन्दिर में जाकर दर्शन किए और दोनों बहनों ने वहां सजदा करने

का सौभाग्य प्राप्त किया।

श्रीमान जगजीत सिंह जी लुधियाना :– मेरे दादा जी ने पाकिस्तान से आकर यू. पी. में ज़मीन खरीदी। चीते, शेरों जैसे जंगली जानवरों की परवाह न करके, भयानक खतरों में से गुजर कड़ी मेहनत से उसे आबाद किया। पिता जी ने भी वहां बहुत परिश्रम किया और कल्लर भरी ज़मीन को उपजाऊ बनाया। हम 7 भाई बहनों को पाला, जहां मच्छरों में जीवन काटा, कोई सवारी नहीं थी, पानी नहीं था। उनके कष्ट अब रह रह कर याद आ रहे हैं। स्कूल जाने के लिए कोई सवारी नहीं थी। पैदल जाने की दिक्कत पिता जी को बताई, उन्होंने फरमाया कि बेटा अभी हालात नहीं है। तुझे साल दो साल सब्र करना पड़ेगा।

पिता जी बहुत ही ईमानदार थे। एक दफा हमने घर बनाना था। उसके लिए 4 लाख ईटों की आवश्यकता थी। भठ्ठे के मुलाज़म ने सस्ती ईटें देने को कहा कि स्वयं कुछ पैसे रखने का जिक्र किया। परन्तु पिता जी ने कहा कि बेईमानी की ईटों से मैं घर नहीं बना सकता। पिता जी ने वही पूंजी हमें दी, जिसका हमें फख़र है।

सन् 1974-75 में अर्दश जी मुझे देव समाज की सभा में ले गए। महोत्सव पर बहुत लाभ हुआ। श्रीमान मुलख़राज जी ने मेरे ऊपर बहुत संग्राम करके मुझे इस निराले मिशन के साथ जोड़ा है। 1980 में मैं सेवक बन गया और सदा के लिए 8 पापों से बच गया।

मुझे दुख है कि मैं माता पिता का बहुत कठोरता भरे बोलों से उनका बहुत अपमान करता रहा हूँ। मैं अपने बहन भाईयों के साथ भी बहुत झगड़ा करता था। भाई बहनों को धक्के मारता। बहनों के थप्पड़ तक लगा देता। पिता जी के कोट को फाड़ने लगा कि यह बहुत भद्दा लगता है। मुझे बहन भाईयों से बदबू आती थी। उनकी शकल देखना नहीं चाहता था। गुरु महाराज ने अपना नीच रुप दिखाया है और उनसे क्षमा मंगवाई है। दादा जी ने खेतों में काम करके अपना रूप स्वाह कर लिया, अब उनके आगे हृदय झुकता है। माता जी ने कैसे जान तोड़कर हम बहन भाईयों को पाला है। उनका रूप अब उनके आगे झुका रहा है। गुरु महाराज की कृपा से मैंने दादा जी, पिता जी और माता जी की फोटो को स्थापन किया है। उनको प्रणाम करता हूँ। गुरु महाराज ने मुझ जैसे कठोर और कर्कश स्वभाव रखने वाले को किस प्रकार बदल दिया है, उसका कर्ज़ा किसी प्रकार भी चुकाया नहीं जा सकता। मैं गुरु महाराज के मिशन में कुछ न कुछ करके अपना भला करना चाहता हूँ।

अब मेरी दुकान पर 5 जन काम करते हैं, उनके सम्बन्ध में भी मेरा बर्ताव बदल गया है। उसके साथ मीठा व्यवहार करता हूँ। मैं अधिक से अधिक गुरु चरणों के साथ जुड़ने का यत्न करूंगा।

एक नौजवान ने अपने आपको अच्छा समझता रहा। अपने आपको ठीक समझने के कारण घर में लड़ाई फसाद रखता था। माता पिता तक पर भी हाथ उठा देता और मारता। (ऊँची-ऊँची चीख़े मारकर रो रहा था।) घर से भाग जाता और उन्हें दुखी करता। माता पिता का हाथ दरवाजे में दे देता। उनकी शक्ल देखने को मन नहीं करता था। इस दर की जो कदर करनी चाहिए थी, नहीं की।

इसको छोड़कर और परे जाकर बहुत बुरा बना हूँ। नशा भी पी गया। अब घर जाकर माता पिता के चरण पकड़ कर क्षमा मांगूगा।

श्रीमान रजिन्द्र जी देहरादून :– इस गांव में आकर मेरा जन्म सुधरा है। मुझे शराब और बीड़ी ने बुरी तरह बर्बाद कर दिया था। बुरी तरह धक्के खा रहा था। बच्चे भूखे मर रहे थे। मेरी जान को रोते थे। कोई होश नहीं थी। पत्नी के उपकार नज़र आए हैं। मुझे बुरी तरह बर्बाद होते पशु को लोगों के कहने पर भी छोड़ा नहीं। एक मां की तरह मुझे सम्भाला और बचाया। इस धरती से मुझे बहुत प्यार हो गया है। मुझे यहा नया जीवन मिला है।

बचपन में ही माता पिता मर गए। उनके दर्शन भी नहीं किए। गुरु महाराज का बार-बार धन्यवाद करता हूँ। इस स्थान की हर सम्भव सेवा करूंगा। अगले साल बिजली का समान लाऊंगा और सेवा करूंगा।

श्रीमान नरेन्द्र दत्त जी धीमान :– मुझे यहां बैठे हुए बचपन की एक घटना याद आ गई। हमारी बहुत छोटी उमर में मां स्वर्गवास हो गई। पिता जी ने हमें पाला। हमारी मां के कपड़े एक मेहतरानी को दे दिए। जब वह कपड़े पहनकर घर आई तो हम उसे अपनी मां समझकर उसके साथ चल पड़े। दादी जी और बुआ जी ने हमारी पालना की। उनका उपकार नज़र आया है। मैंने बचपन में छोटी सी चोरी कर ली। दादी जी ने मुझे डांटा और सजा भी दी। नाक से लकीरें निकलवाई, मैं चोर बनने से बच गया। उनका यह उपकार नज़र आकर उनके आगे झुका रहा है।

श्रीमान मास्टर तेज राम जी गुजरात :– मैंने इस दर से बहुत लाभ उठाया है। पिता जी का रूप दिखाया और उनकी कुछ न कुछ सेवा करने के योग्य बनाया। मेरी बहुत रक्षा हुई है। ऐसे दुर्लभ अवसर प्रदान किए हैं। मलेका (सिरसा) के लिए 1000 रु० और दान दिए।

समय काफी हो चुका था। सभा समाप्त की गई। सभापति जी ने उन सौभाग्यवान जनों को माता पिता का हारों द्वारा सम्मान करने को कहा, जिनके माता पिता वहां वर्तमान थे। बहुत स्वर्गिय दृष्य था, जो गुरु महाराज के चरणों में झुका रहा था। 50 के करीब जनों ने यह हितकर साधन किया। कईयों के दिल भरे हुए थे। एक जिमीदार बाप को जब उनके नौजवान बच्चों वाले बेटे ने हार पहनाया। (शायद पहली बार।) और उनके चरणों में सिर रखकर प्रणाम किया तो पिता का दिल भर आया और वह फूट-फूट कर रोने लगा और गुरु महाराज को धन्यवाद देने लगा। उनके इस बेटे ने महोत्सव पर आकर लाभ उठाया था और शराब मांस से तोबा की थी।

कुछ जनों ने हार ले जाकर घर में माता पिता का अर्चन का साधन किया।

हाजरीन से 5 हजार स्थानी लंगर के लिए दान दिया। चार बार जय ध्वनि करके सभा समाप्त हुई। हाजरीन को भोजन और हलवा खिलाया गया, फिर सब अपनी कारों, मोटर साईकलों वा टैंपुओं आदि पर जाने लगे तो बहुत अच्छा दृष्य था।

गुरु महाराज वा सहायकारी की कृपा से सारा प्रोग्राम बहुत कामयाबी के साथ सम्पन्न हुआ।

यात्रियों ने गांव में चल रहे खून दान कैंप में जाकर एक दर्जन के करीब जनों ने खून दान दिया और इस खून दान की सेवा की बरकतों और खूबियों के सुन्दर शब्दों में ब्यान करके लोगों को खून दान देने के लिए मोटीवेट किया। इससे भी पब्लिक ने अच्छे प्रभाव हासिल किए।

(एक सेवक)

अंधविश्वास कैसे – कैसे

अंधविश्वास का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं होता फिर भी हम उन्हें मानते हैं। अंधविश्वास हमारे विकास, उन्नति और प्रयास में रोड़े ही अटकाते हैं। अंधविश्वासों की एक बानगी प्रस्तुत कर रहे हैं।

ऐसी बहुत सी बातें हैं जो निराधार हैं या जिन के पीछे कोई वैज्ञानिक तर्क नहीं है, पर महज अंधविश्वास की वजह से हम उसे अपनाते हैं और बढ़ावा देते हैं। यही कारण है कि इन अंध विश्वासों की जड़ें आज काफी गहरी हो गई हैं और एक पीढ़ी दर पीढ़ी अंधविश्वास चले आ रहे हैं।

अंधविश्वासों की सूची काफी लंबी है। यदि इन सब का जिक्र किया जाए तो उस के लिए एक ग्रंथ भी कम पड़ सकता है। हर जाति, धर्म और संप्रदाय के अपने अंधविश्वास हैं। यही बात देश के अलग - अलग राज्यों की है। यानी सम्पूर्ण भारत ही अंधविश्वास में जकड़ा हुआ है। इन में कुछ निम्न हैं:

1) यदि कोई व्यक्ति घर से बाहर जा रहा है तो उसे पीछे से आवाज नहीं देनी चाहिए, अन्यथा बनता काम बिगड़ सकता है।

2) घर से निकलते वक्त यदि कोई छींक दे तो थोड़ी देर रुक जाना चाहिए वरना अनिष्ट हो सकता है।

3) मुंडेर पर कौआ बोले तो कोई मेहमान आने वाला है।

4) कौआ यदि सिर पर बैठ जाए तो अपने सम्बन्धियों को मौत का तार भेजना चाहिए।

5) आंख फड़कने से झगड़ा होता है।

6) हथेली पर खुजली का मतलब है धन की प्राप्ति।

7) बुधवार को दिशाशूल होता है, इसलिए बहन बेटी को घर से विदा नहीं करना चाहिए।

8) 13 का अंक अशुभ होता है।

9) शनिवार अशुभ है, इसलिए कोई भी नया काम इस दिन शुभ नहीं करना चाहिए।

10) शनिवार के दिन तेल नहीं खरीदना चाहिए तथा जूते, लोहे का सामान भी नहीं खरीदना चाहिए।

11) कांच की चूड़ियों का टूटना अपशकुन है।

12) सपने में किसी परिजन की मौत देखने से उस की उम्र बढ़ती है।

13) सुबह का सपना सच होता है।

14) काली बिल्ली अशुभ होती है।

15) नमक जमीन पर गिरता है तो नर्क में उसे पलकों से उठाना पड़ता है।

16) सुबह - सुबह जमादार झाड़ूटोकरा ले कर दिखाई दे, तो बनता काम बिगड़ जाता है।

17) दीवाली की रात बिल्ली घर में चक्कर लगाए तो शुभ होता है।

18) बच्चों को बुरी नजर से बचाने के लिए काला टीका लगा देना चाहिए अथवा उन के गले में ताबीज पहना देना चाहिए।

19) उलटा पैदा होने वाले बच्चे से यदि लात लगवाई जाए तो कमर दर्द दूर हो जाता है।

20) नाग को मारने से नागिन बदला लेती है।

21) नाग के सिर पर मणि होती है।

22) शुभ अवसरों पर विधवाओं की उपस्थिति

अपशकुन होती है।

23) घर से बाहर निकलते समय यदि कोई खाली बर्तन ले कर आता हुआ निकले तो अशुभ और भरा ले कर देखाई दे तो शुभ होता है।

24) परीक्षा देने जाते समय घर से निकलने से पहले दही खाना शुभ होता है।

25) गंगा में स्नान करने से पाप धुल जाते हैं।

26) मृत्यु शैया पर पड़े व्यक्ति के मुंह में गंगाजल डालने से वह स्वर्ग में जाता है।

इस तरह के अंधविश्वासों का कोई अंत नहीं है। जितने लोग, उतने ही तरह के अंध विश्वास। अंधविश्वासों की जड़ें इतनी गहरी हैं कि लोग इन्हें छोड़ना नहीं चाहते। जरा इन अंध विश्वासों की चौखट से बाहर निकल कर तो देखिए, दुनिया कितनी रोशन है।

अंधविश्वास गांवों के अनपढ़ लोगों के दिमाग में ही घर कर गए हों ऐसी बात नहीं है बल्कि शहरों के पढ़े लिखे लोगों में भी यह व्याप्त हैं। यहां तक कि वैज्ञानिक, डाक्टर, प्रोफेसर, इंजीनियर, आई. ए. एस., पत्रकार, फिल्म अभिनेता और अभिनेत्री, राजनेता आदि भी अंधविश्वासों से अछूते नहीं हैं। कहने का मतलब यह है कि अंध विश्वासों का जाल इतना व्यापक है कि इस में बच्चे, बूढ़े और जवान सभी फंस चुके हैं।

यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि आज टेलीविजन चैनलों पर भूतप्रेतों एवं कपोलकल्पित डरावनी घटनाओं पर आधारित धारावाहिकों की बाढ़ सी आ गई है, जिन से व्यापक पैमाने पर अंधविश्वास फैल रहा है।

चमत्कारों एवं कपोलकल्पित घटनाओं को सही मान लेने की मनोवृत्ति लोगों की वास्तविक, सामाजिक आर्थिक एवं पारिवारिक समस्याओं से पलायन की परिचायक तो है ही, धार्मिक विश्वासों, मान्यताओं एवं आस्थाओं को हकीकत में बदलते हुए देखने की उन की प्रबल इच्छा का भी परिचायक है।

अंधविश्वास ऐसी चीज है, जिस में जरा भी सचाई नहीं होती। जब तक व्यक्ति इस की गिरफ्त में रहता है, उस की सोच शकुन-अपशकुन, शुभ-अशुभ, अच्छा-बुरा आदि तक ही सीमित रहती है। कुछ लोग तो इतने ज्यादा अंधविश्वासी हैं कि उन्हें पगपग पर अंधविश्वास का सामना करना पड़ता है। ये अंधविश्वास, विकास, उन्नति और प्रयास में रोड़े ही अटकाते हैं। इन अंधविश्वासों का कोई औचित्य नहीं है। व्यक्ति को अपने कर्म और अपने आप पर विश्वास होना चाहिए, फिर कोई भी अंधविश्वास उस का बाल बांका नहीं कर सकता।

अन्धेरा गहरा रुहानी, छाया सारी दुनियां में।
चढ़े सूरज वह रुहानी, अन्धेरा सब मिटाने को।
मिथ्या विश्वासों में पड़कर, विनष्ट होते हैं लाखों जन।
हुए देवात्मा जाहिर, यह सब मिथ्या मिटाने को।

जीवन प्रसंग

1) मार्क एक दिन स्कूल से घर लौट रहा था। रास्ते में उसने देखा कि सड़क पर उसके सामने चल रहा लड़का ठोकर लगने के कारण गिर गया और उसके हाथ का सामान सड़क पर फैल गया। वह बहुत सारा सामान ले जा रहा था, जिसमें बहुत सी पुस्तकें, दो स्वेटर, बेसबॉल का बैट, दस्ताने और एक छोटा टेप रिकॉर्डर था। मार्क ने फैले हुए सामान को उठाने में उस लड़के की मदद की। वे दोनों एक ही दिशा में जा रहे थे, इसलिए मार्क ने उसका थोड़ा सा सामान उठा लिया। रास्ते में बातें करते समय मार्क को पता चला कि उस लड़के का नाम बिल था और उसे वीडियो गेम, बेसबॉल और इतिहास विषय पसंद थे। उसे यह भी पता चला कि उसे बाकी विषयों में काफी मुश्किल आ रही थी और हाल ही में उसकी गर्लफ्रेंड से उसका झगड़ा हो गया था।

रास्ते में पहले बिल का घर आया। उसने मार्क को कोक पीने और टेलीविजन देखने का निमंत्रण दिया। दोपहर तक हंसी-मजाक और बातचीत का दौर चला। फिर मार्क अपने घर चला गया। वे स्कूल में एक-दूसरे से मिलते रहे, कभी-कभार साथ में लंच किया और उन्होंने जूनियर स्कूल की पढ़ाई पूरी कर ली। फिर वे एक ही हाईस्कूल में पढ़ने लगे, जहां बरसों तक उनका संपर्क बना रहा। आखिर उनके हाई स्कूल की डिग्री मिलने का वक्त आ गया। डिग्री मिलने के तीन सप्ताह पहले बिल ने मार्क को अलग बुलाकर उससे बातचीत की। बिल ने उसे बरसों पहले का वह दिन याद दिलाया, जब उनकी पहली मुलाकात हुई थी। बिल ने पूछा, 'क्या तुमने कभी सोचा कि मैं उस दिन इतना सारा सामान घर क्यों ले जा रहा था? देखो, उस दिन मैंने अपना लॉकर खाली कर दिया था, क्योंकि मैं वहां पर कचरा नहीं छोड़ना चाहता था। मैंने अपनी मम्मी की नींद की गोलियां इकट्ठी कर ली थी और मैं घर जाकर आत्महत्या करने वाला था, लेकिन जब हमारी मजेदार बातचीत और हंसी-मजाक हुई, तो मुझे एहसास हुआ कि अगर मैं आत्महत्या कर लेता, तो मुझे ऐसा करने का मौका नहीं मिलता। मैं समझ गया कि अगर मैं आत्महत्या कर लूंगा, तो मुझे भविष्य में ऐसे खुशी के मौके नहीं मिल पाएंगे। तो मार्क, जब तुमने उस दिन मेरी किताबें उठाई थी, तो तुमने मेरी बहुत ज्यादा मदद की थी। दरअसल तुमने मेरी जान बचाई थी।

जॉन डब्ल्यू, श्लेटर

2) **हर एक को प्रभावित करती है प्रशंसा**

लगभग हर एक व्यक्ति सराहना का भूखा होता है। इसलिए जब कोई सचमुच हमारी प्रशंसा करता है तो उसका बहुत अच्छा असर पड़ता है।

प्रशंसा की कला जिसे मनोवैज्ञानिक भाषा में सकारात्मक पुनर्बलन कहा जाता है, एक ऐसी अनिवार्य कला है, जिसमें हर एक्जीक्यूटिव या शिक्षक को पारंगत होना चाहिए। कर्मचारियों की सबसे बड़ी शिकायत यह होती है कि 'मुझे कभी अपने बॉस की तरफ से कोई फीडबैक नहीं मिलता। फीडबैक तभी मिलता है, जब कोई काम गलत हो जाता है।' इसी प्रकार कई विद्यार्थियों की शिकायत होती है कि 'जब मैं स्कूल में कोई गड़बड़ करता हूँ तो मेरे डैडी आसमान सिर पर उठा लेते हैं, परन्तु जब मैं परीक्षा में अच्छे नंबर लेकर लौटता हूं तो उनका व्यवहार ऐसा होता है जैसे कुछ हुआ ही न हो। वे ऐसा सोचते हैं जैसेमैं अब आखिरकार

वही कर रहा हूं, जो मुझे शुरू से ही करना चाहिए था।

वन मिन्ट मैनेजर में लेखक ने सुझाव दिया है कि 'एक मिन्ट की तारीफ' के लिए अक्सर समय निकालें। साथ ही अपने अधीनस्थ के द्वारा कोई काम सही तरह करते हुए जब भी देखें, तत्काल प्रशंसा करें। यह बच्चों और कर्मचारियों से अच्छे काम करवाने का एक प्रभावी तरीका है। ऐसे ही शिक्षकों के बारे में देखा जाता है कि वे माता-पिता को तब बुलाते हैं, जब कोई बच्चा अच्छा प्रदर्शन नहीं कर रहा होता है। लेकिन समझदारी इसमें होगी कि वे उन बच्चों के माता-पिता को बुलाने के बारे में भी विचार करें, जो उत्कृष्ट हैं या जिनमें उल्लेखनीय सुधार हुआ है। विद्यार्थियों के प्रति इस तरह से सम्मान दिखाने का असर स्कूल के माहौल को प्रभावित करने के लिए काफी है।

हममें से लगभग हर एक सराहना का भूखा होता है। इसलिए जब कोई व्यक्ति सचमुच हमारी प्रशंसा करता है तो हम पर उसका बहुत अच्छा असर पड़ता है। सेम्युअल जॉनसन ने कहा था, 'किसी अकेले इंसान की प्रशंसा बड़े महत्त्व की होती है।'

एकल लॉय मैक्विगनिस

3) आशा पर ही टिका है आसमान

किसी भी स्थिति में आशा नहीं छोड़े। आशा ही प्रतिकूलताओं से लोहा लेने और उन पर विजय प्राप्त कर उपलब्धि की राह आसान बनाती है।

दो राजाओं में युद्ध हुआ। विजयी राजा ने हारे हुए राजा के किले को घेर लिया और उसके सभी विश्वासपात्र अधिकारियों को बंदी बनाकर कारागृह में डाल दिया। उन कैदियों में पराजित राजा का युवा मंत्री और उसकी पत्नी भी थी। दोनों को किले के एक विशेष हिस्से में कैद कर रखा गया था। कैदखाने के दरोगा ने उन्हें आकर समझाया कि हमारे राजा की गुलामी स्वीकार कर लो, नहीं तो कैद में ही भूख-प्यासे तड़प-तड़प कर मर जाओगे। किंतु स्वाभिमानी मंत्री को गुलामी स्वीकार नहीं थी, इसलिए वह चुप रहा। दरोगा चला गया। इन दोनों को जिस भवन में रखा गया था, उसमें सौ दरवाजे थे। सभी दरवाजों पर बड़े-बड़े ताले लगे हुए थे। मंत्री की पत्नी का स्वास्थ्य लगातार गिर रहा था और वह बहुत घबरा गई थी, किंतु मंत्री शांत था। उसने पत्नी को दिलासा देते हुए कहा - निराश मत होवो। गहरे अंधकार में भी रोशनी की एक किरण अवश्य होती है। ऐसा कहकर वह एक-एक दरवाजे को धकेलकर देखने लगा। दरवाजा नहीं खुला। लगभग बीस-पच्चीस दरवाजे देखे, किन्तु कोई भी दरवाजा नहीं खुला।

मंत्री थक गया और उसकी पत्नी की निराशा बढ़ती गई। वह बोली - तुम्हारा दिमाग तो ठीक है? इतने बड़े-बड़े ताले लगे हैं, भला तुम्हारे धक्कों से वे दरवाजे कैसे खुलेंगे? किंतु मंत्री हताश नहीं हुआ और वह उसी लगन से दरवाजों को धकेलता रहा। उसने निन्यानवे दरवाजे धकेले, किंतु एक भी नहीं खुला। पत्नी ने चिढ़कर उसे बैठा दिया। किंतु थोड़ी देर बाद वह पुनः खड़ा हुआ और सौवे दरवाजे को धक्का दिया। धक्का देते ही उसकी चूलें चरमराई। मंत्री को अनुमान हो गया कि यह दरवाजा खुल सकता है। उसने दोगुने उत्साह से दरवाजे को धक्का मारना शुरू किया और थोड़ी देर में वह खुल गया। उसकी पत्नी बोली - अरे, यह कैसे खुल गया। मंत्री ने शांत भाव से जवाब दिया इसलिए कि जिन्दगी में कभी सारे दरवाजे बंद नहीं हुआ करते। उस दरवाजे से निकलकर मंत्री और उसकी पत्नी ने कैद से आजादी पा ली।

आनन्द का स्त्रोत

सुख प्राप्त करना वा खुश रहना प्रत्येक मानव के स्वभाव में है। परन्तु सच्ची खुशी वा आनन्द की परिभाषा बहुत कम मनुष्य जानते हैं। अधिकतर मनुष्यों का यह मानना है कि यदि उनके पास धन, दौलत और सुख सुविधाएं अधिक मात्रा में हों तो उन्हें सच्चा सुख वा आनन्द प्राप्त हो सकता है, परन्तु अनुभव यही बताता है कि बहुत सी सुख सुविधाएं रखकर भी आम मनुष्य रात को नींद की गोलियां खाकर भी नहीं सो सकता जबकि एक-एक झुगी झोंपड़ी में रहने वाला मजदूर खर्राटे भरता सो रहा होता है। सोने से पहले चीथड़ों में रहने वाले जन गाने गाते हैं, हंसते हैं।

किसी का विचार होता है कि सब काम छोड़कर यदि ईश्वर भक्ति में लीन हो जाओ तो सच्चा आनन्द है, परन्तु खाली रहकर भी, उपदेशक बनकर भी, नीच प्रवृतियां उन्हें नहीं छोड़ती, कोई घोटालों में फंसे हुए है, कोई अपराधिक मामलों में, कोई बलात्कार आदि घृणित कर्म करके जेलों में जाते हैं।

वास्तव में मनुष्य के भीतर इतनी ऊर्जा है कि यदि उसका सही उपयोग न हो तो न उसे सच्ची खुशी मिल सकती है और न ही वह समाज का कोई उपयोगी अंग बन सकता है। जब तक आप कोई निर्माण का कार्य नहीं करते, किसी और के लिए नहीं सोचते तो मनुष्य कभी खुश नहीं रह सकते। यदि निर्माण नहीं होगा, तो विध्वसंक क्रियाओं में मनुष्य संलग्न होते जाते हैं। आज का आतंकवाद इसका जीता जागता प्रमाण है। नौजवान पीढ़ी खाली रहकर मेहनत न करके लुभावने सपने देखती है, तो उन्हें लालच देकर विध्वंसक कार्यों में लिप्त कर लिया जाता है।

इसका यह अर्थ भी नहीं है कि हम अपनी रोज़ी रोटी न कमाए। इसमें भी सर्जन होता है, जब कोई जन मेहनत से कोई कारखाना लगाता है, तो कितने आदमियों को रोज़ी मिलती है, यह सर्जन का काम है, लेकिन यदि वह अपने मज़दूरों का पूरा हक देता है, उनके दुख सुख को अपना समझकर उनकी सहायता करता है, उनके बच्चों की पढ़ाई में सहायता करता है, तो वास्तव में निर्माण का काम करता है। उसे सफलता भी मिलेगी और सच्ची खुशी भी।

दिन भरके अपने कामों में से समय निकालकर यदि आप किसी का कोई अभाव दूर करते हो, किसी गरीब बिमार की सहायता कर देते हो, किसी अनपढ़ को थोड़ा समय भी दे देते हो, तो यह निर्माण का कार्य आपको सच्ची खुशी का भागी बनाता है, क्योंकि किसी के निर्माण से ही हमारा निर्माण होता है। अपनी कमाई से चाहे आप थोड़ा सा भी भाग किसी अभावहीन को देते हो, आप अपना निर्माण करते हो। हमारी स्वभाविक शक्ति जब निर्माण में बदलती है, तो हम तनाव रहित होते हैं। हम छोटी-छोटी क्रियाओं के द्वारा थोड़ा-थोड़ा अपने निर्माण की ओर बढ़ते हैं। अपना सारा समय, अपनी सारी शक्तियां दूसरों के लिए लगाना तो करोड़ों में से कोई एक लगा सकता है परन्तु थोड़ा सा समय, थोड़ा सा धन, थोड़ी सी जरूरतों के चीज़ें किसी को देकर किसी का आभाव तो दूर कर सकते हैं जैसे :-

1) अपने घर में बहुत सी वस्तुएं प्रयोग में नहीं आती, उनके स्थान पर नई चीजें आ जाती है, आमतौर पर वह चीजें उठाकर किसी स्टोर में या और स्थान पर रख देते हैं, यदि उसी समय किसी गरीब या जरूरत मन्द को दे दी जाएं, तो उनका सही प्रयोग हो सकता है और आपका भी भला होगा।

(क) घर के बर्तन (ख) कोई बिजली का सामान (ग) कोई उतरी हुई घर की खिड़कियां आदि थोड़ी मुरम्मत से काम में लाई जा सकती हैं, कोई पुराने गलीचे, प्लास्टिक के पुराने डिब्बे, बाल्टियां (कबाड़ी से आपको केवल चन्द पैसे वा रू० मिलते हैं) पुरानी कटोरियां, चम्मच जो आप काफी समय से प्रयोग में नहीं ला रहे। पुराने गद्दे, रजाईयां आदि बहुत सारी वस्तुएं जो कई-कई वर्ष प्रयोग में नहीं आती, परन्तु देने की हिम्मत नहीं होती। घर कबाड़खाना बना रहता है।

एक घर में मैंने देखा कि इतना पुराना सामान भरा पड़ा था कि जब नई चीजों की रखने की जगह न रही, तो अपने एक सम्बन्धी की प्रेरणा से उन्होंने दान नहीं बल्कि कबाड़ियों को देने का फैसला किया। परन्तु सुबह तक उसमें से कुछ तो पति साहिब ने और कुछ पत्नी साहिबा ने फिर अन्दर रख दिया, थोड़ा सा सामान ही बाकी बचा।

कई बच्चे तो इस ताक में रहते हैं कि उनके माता पिता के परलोक गमन पर फौरन सारा कबाड़ बाहर फैंके, फिर क्यों न अपने ही हाथ से उसे अभावग्रस्त को देकर अपना कुछ भला कर सकें।

2) पहनने वाले कपड़ों के भी अम्बार लग जाते हैं, जूतों के, स्वेटरों के परन्तु नये खरीदते रहते हैं, परन्तु देने का हौसला नहीं पड़ता। मैंने कई घरों से प्रेरणा करके फालतु सामान निकलवाया है। हम इस ओर अगर ध्यान दे तो अपना कुछ भला कर सकते हैं और घरों को भी साफ रख सकते हैं।

3) धन के द्वारा दूसरों की सहायता कर सकते हैं। अपने हालात के अनुसार यदि किसी बच्चे की फीस देकर, जिसके जूते नहीं खासकर सर्दियों में उसे जूते दिलवाकर, किसी गरीब को किताबें दिलवाकर, कोई बच्चा कमजोर है, गरीब है उसको अपने पास से दूध वा कुछ अच्छी खुराक नियमित रूप से देकर, किसी को दवाई वा टानिक आदि देकर आदि अपनी पहुंच के अनुसार दूसरों की मदद करके अपना निर्माण का थोड़ा सा प्रयास कर सकते हैं।

4) यदि आप पढ़े लिखे हो, तो किसी को पढ़ने में मदद कर सकते हो, पढ़ाई में कमजोर बच्चों को अपने समय में कुछ समय निकालकर उसकी सहायता हो सकती है।

इस तरह जब हम इस ओर कदम बढ़ाते हैं, तो और बहुत कुछ करने के मार्ग खुल जाते हैं। हमें पूजनीय भगवान के देव प्रभावों के मण्डल में बैठने का अवसर मिला है, बड़ी सभाएं नहीं करवा सकते तो छोटे-छोटे बच्चों को इकट्ठे करके उन्हें नीति शिक्षा करवा सकते हैं। किसी के काम आने से ही जीवन सफल होता है।

जब हम छोटी-छोटी सेवाओं में व्यस्त रहते हैं, तो अनुचित चिन्ताओं से भी मुक्त रह सकते हैं। अपनी शारीरिक, मानसिक वा हार्दिक शक्तियों का अधिक से अधिक उपयोग चिन्ताओं को दूर करने और सच्चा सुख प्रदान करने की परम औषधि है। हमारे जीवन का विकास निर्माण के कार्यों से ही होता है।

हमारा इस विषय में बहुत सुन्दर भजन है, जो नीचे दे रहे हैं।

WPP - Regd. CHD. 0077/09-011 **Published on 5th of the month**
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

आनन्द

मेरी यह तुच्छ सी हस्ती किसी के काम आ जावे,

मेरे जीवन की जो पूंजी, किसी के काम आ जावे।

मेरी विद्या मेरी बुद्धि, किसी के काम आ जावे,

है मेरे पास जो कुछ भी, किसी के काम आ जावे।

मेरा धन और सम्पति, किसी के काम आ जावे।

मेरा घर बार और खेती, किसी के काम आ जावे।

मेरे लासानी सत्गुरु ने, दिखाया भेद यह मुझको,

है जीवन सफल बनता जो, किसी के काम आ जावे।

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए., (लाईफ़ वर्कर) मंत्री - देव - धर्म - मिशन। प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने ***Surya Laser Den, Chandigarh - 160036*** *से छपवाकर म. नं. 3154, सैक्टर 21 - डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts